ISSN -PRINT-2231-3613ONLINE2455-8729
International Educational Journal
UGC APPROVAL NO. - 42652
CHETANA

Received on 8th April 2018, Revised on 10th April 2018; Accepted 19thApril 2018

शोधपत्र

हिन्दी साहित्य में पं. झाबरमल्ल शर्मा की देन

* डॉ. रामकुमार सिंह
व्याख्याता, हिन्दी विभाग, राजकीय महाविद्यालय, रामगढ़ शेखावाटी सीकर
Email-ramkumarsingh358@gmail.com, Mob.- 9460166640

मुख्य शब्द : *सांस्कृतिक पुनर्जागरण, स्वतन्त्रता आन्दोलन, चेतना वाहिनी आदि.*

पिछले 125 वर्षों में हिन्दी भाषा, पत्रकारिता और साहित्य के विकास की दिशा में हिन्दी वाङ्मय का विकास करने वाले जिन विद्वानों और जिन क्षेत्रों का उल्लेख साहित्य के इतिहासकार कर सकते हैं, उनमें राजस्थान के अनेक साहित्यकारों एवं पत्रकारों का नाम पुरूष रूप में मूर्धन्य पंक्तियों में आयेगा। जिस युग में हिन्दी विकास की प्रक्रिया में थी, ब्रजभाषा के रूप में सारे देश की सम्पर्क भाषा बनाने की देश प्रेमियों की इच्छा जब इसके प्रति थी, सांस्कृतिक पुनर्जागरण ओर स्वतन्त्रता आन्दोलन की चेतना वाहिनी के रूप में जब इसका विकास हो रहा था, तब जिन क्षेत्रों और व्यक्तियों ने इसके सुविशाल भवन की नींव की ईटों के रूप में काम किया था, उनमें से राजस्थान के क्षेत्र और व्यक्ति चाहे प्रचार न पा सकें हो, किन्तु उनके योगदान को भुलाया नहीं जा सकता। ऐसे साहित्य सेवियों में पं. झाबरमल्ल शर्मा का नाम प्रमुखतः उल्लेखनीय है। पं. झाबरमल्ल शर्मा का प्रादुर्भाव ऐसे समय में हुआ था, जब भारतीय राजनीति एक नया मोड़ ले रही थी। लोकमान्य तिलक देश की राजनीति का नेतृत्व कर रहे थे और गांधी का युग प्रारम्भ होने वाला था। बंग–भंग के विरोध में जन–चेतना देश को उद्वेलित कर चुकी थी और राष्ट्रीयता से ओत–प्रोत प्रेरणादायी पत्रकारिता प्रारम्भ हो चुकी थी। भारतीय समाज में समाज सुधार के लिए अनेक संस्थायें सक्रिय थी तो अनेक संगठन देश की स्वतन्त्रता के लिए संघर्ष कर रहे थे। आर्थिक क्षेत्र में भी स्वदेशी जागरण कार्यक्रम के अन्तर्गत भारतीय अर्थव्यवस्था के क्षेत्र में नूतन प्रयोग हो रहे थे। इन सब बातों का साहित्यिक परिवेश पर प्रभाव पड़ना अपेक्षित था। इस प्रकार पं. झाबमरल्ल शर्मा नयी चेतना के वातारण में अपने कार्य क्षेत्र मे उतरे।

वे एक बहुमुखी प्रतिभा के धनी थे। वे उच्च कोटि के पत्रकार होने के साथ ही साहित्य, इतिहास और संस्कृति के प्रकाण्ड विद्वान थे। एक आदर्श एवं प्रवीण सम्पादक , कुशल प्रबन्धक, आदर्श समाज सेवी, आदर्श राष्ट्रभक्त, जनजागरण के पुरोधा तथा एक उत्कृष्ट साहित्यकार के रूप में उनको प्रतिष्ठा प्राप्त हुई। पं. शर्मा ने देश की साहित्यिक और सांस्कृतिक विरासत को संजोकर उसे लिपिबद्ध करने का उन्होंने ऐतिहासिक कार्य किया। उन्होंने अपने पूर्ववर्ती तथा समकालीन साहित्यकारों और पत्रकारों के बहुमूल्य योगदान का दस्तावेजीकरण कर उसे आने वाली पीढ़ियों के लिए सुरक्षित करने का यशस्वी कार्य भी सम्पन्न किया।

पं. झाबरमल्ल शर्मा ने साहित्य की विविध विधावों पर जैसे काव्य, निबन्ध, समालोचना, जीवन–चरित, उपन्यास, शोध–लेख, लोक–साहित्य एवं संस्कृति से सम्बन्धित लेख व पुस्तकों, संपादित ग्रन्थों के साथ–साथ इतिहास लेखन का कार्य किया। अनेक साहित्यिक पत्र–पत्रिकाओं में अनेक खोजपूर्ण लेख प्रकाशित हुए। उदाहरणार्थ 'मरुभारती' और 'वरदा' जैसी साहित्यिक पत्रिकाओं में उनके अनेक लेख प्रकाशित हुए है। खेतड़ी के 'रामकृष्ण मिशन' संस्था के व्यवस्थापक रहते हुए उन्होंने कुशल प्रशासक का परिचय दिया था। राजस्थानी साहित्य एवं संस्कृति व इतिहास सम्बन्धित अनेक शोधपूर्ण लेख लिखकर हिन्दी तथा राजस्थानी भाषा की महान सेवा की है। वे एक कुशल एवं दूरदर्शी संग्राहक भी थे। उन्होंने अपने विशाल संग्राहलय में अनेक दुलर्भ कृतियों पत्र–पत्रिकाओं आदि का संग्रह करके उनका अनुरक्षण किया जो ऐतिहासिक दृष्टि से महत्वपूर्ण ही नहीं विस्मृत इतिहास की कड़ी

जोड़ने में भी सक्षम है। उनके अनूठे संग्रह से भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम इतिहास, साहित्य एवं लोक समाज के अनेक अनछुए प्रसंग उजागर होगें, जिन पर शोध की आवश्यकता है।

पं. झाबरमल्ल शर्मा के काव्य के अनुशीलन से यह निष्कर्ष निकलता है कि उन्होंने स्वाधीनता आन्दोलन में भाग लेने के लिये जनता को जागृत कर उनमें देश–प्रेम की भावना जगाना तथा व्यवस्था के प्रति आक्रोश प्रकट कर विदेशी शासन को उखाड़ फैंकना उनके काव्य का उद्देश्य था। हालांकि उन्होंने काव्य क्षेत्र में नूतन प्रयोग तो नहीं किये, किन्तु दोहे जैसे छंद के द्वारा राष्ट्र नायकों के जीवनादर्शों को जनता के समक्ष रखा। उनकी काव्य कृतियों, 'तिलक गाथा', गांधी–गुणानुवाद' इसके प्रत्यक्ष उदाहरण है। 'बधाई निवेदन' और 'हृद्यानुभूति' में उन्होंने देश की दीन–दशा का चित्रण कर आजाद भारत के नेताओं को जनता के हित के लिये कार्य करने के लिय कहा वे 'रामराज्य' के आदर्शो के अनुकूल शासन व्यवस्था के अभिलाषी थे। उनके काव्य के देश–प्रेम, ठोस सामाजिकता, मानवता के विकास में अविचल आस्था, गांधी–तिलक के जीवन–दर्शन के प्रति अनुराग, युद्ध विरोधी भावना और अज्ञात शक्ति में विश्वास आदि को देखा जा सकता है। वे किसी पूर्वाग्रह से ग्रस्त नहीं है। वर्तमान व्यवस्था के प्रति आक्रोश उनके कविताओं में देखा जा सकता है। राष्ट्रकवि दिनकर को देश की दोषपूर्ण शासन व्यवस्था–परिस्थिति पर भारी मन से लम्बी कविता 'हृद्यानुभूति' लिखी थी।

पं. झाबरमल्ल शर्मा ने कोई प्रबन्ध काव्य तो नहीं लिखा, किन्तु उनकी दो काव्य रचनाओं, 'तिलक–गाथा' और 'गांधी–गुणानुवाद' में प्रबन्धात्मक तथा महाकाव्यात्मक औदात्य की विशेषताएं विद्यमान हैं। इन दोनों रचनाओं को हम 'वृहद् कविता' की श्रेणी में रख सकते । अन्य कविताओं को मुक्तक काव्य की श्रेणी में रख सकते है। छंद–विधान की दृष्टि से इनके काव्य का मूल्यांकन करे तो 'दोहा' छन्द का ही प्रयोग इनकी काव्य रचनाओं में हुआ है।

एक गद्य लेखक के रुप में पं. झाबरमल्ल शर्मा ने हिन्दी साहित्य की महान सेवा की है। उन्होंने हिन्दी गद्य के अन्तर्गत उच्च कोटि के सम्पादकीय लेख तथा समालोचनात्मक एवं शोधात्मक निबन्ध लिखे। पं. शर्मा के सम्पादकीय लेखों एवं निबन्धो में देश, समाज, संस्कृति, राजनीति, इतिहास, लोक–संस्कृति का विशद् विवेचन हुआ है। हालांकि निबन्धों पर उनका कोई स्वतन्त्र संकलन प्रकाशित नहीं हुआ है, पर उन्होंने पत्रकारिता के क्षेत्र में कार्य करते हुये अनेक सम्पादकीय लेख लिखे थे। 'कलकत्ता समाचार' के सम्पादकीय लेखों का संकलन 'समय से साक्षात्कार' प्रकाशित हो चुका है। इनके 'मरूभारती' और 'वरदा' जैसी साहित्यिक पत्रिकाओं में इनके निबन्ध प्रकाशित हुए है। इनके निबन्धों के अध्ययन से हम इस निष्कर्ष पर पहुंचते हैं कि उनके निबन्धों में कथ्य अर्थात् कहने को बहुत कुछ है। इतिहास, अध्यात्म तथा दर्शन, लोक–संस्कृति, वैयक्तिकत्ता, राष्ट्रप्रेम तथा मानवतावाद से प्रेरित विषयवस्तु उनकी दृष्टि की व्यापकता का बोध कराती है। कविता के समान ही गद्य में भी उनका शब्द स्रोत सम्पन्न रहा है।

पं. झाबरमल्ल शर्मा हिन्दी साहित्य और पत्रकारिता के एक मात्र ऐसे शिखर पुरूष थे, जिन्होंने अपनी पूरी क्षमता और ज्ञान का प्रयोग कर उन सब साहित्यकारों, पत्रकारों, राष्ट्रपुरूषों तथा शेखावाटी के राजा अजीत सिंह की कीर्ति रक्षा में किया, जिनका वे आदर करते थे। पं. शर्मा को साहित्य प्रेरणा राष्ट्र और राष्ट्र के महापुरूषों से मिली थी। भारत राष्ट्र के महापुरूषों विवेकानन्द, अरविन्द, गणेश शंकर विद्यार्थी, राजा अजीतसिंह और नेहरू परिवार के सदस्यों का जीवन चरित्र लिखा ही, वहीं उन्होंने बनारसीदास चतुर्वेदी के साथ मिलकर दिवंगत साहित्यकारों माधवप्रसाद मिश्र, बालमकुन्द गुप्त, चन्द्रधर शर्मा 'गुलेरी' आदि का जीवन चरित्र भी लिख कर उनकी साहित्यिक साधना को उजागर करने का ऐतिहासिक कार्य किया। इन जीवन चरितों मे उन्होंने ऐतिहासिकता की भी रक्षा की है और भूले–बिसरे लेखकों को पुनः प्रकाश में लाकर साहित्यकार के दायित्व का निर्वाह भी किया है। जीवनचरितों से सम्बन्धित सभी कृतियों का महत्व केवल इसलिए नहीं है कि ये कृतियां साहित्यिक दृष्टि से अपना अलग स्थान रखती है, बल्कि ये कृतियां इतिहास ग्रन्थ भी है, क्योंकि पं. शर्मा ने इनके माध्यम से उस कालखण्ड का प्रमाणिक इतिहास भी प्रस्तुत किया है।

पं. झाबरमल्ल शर्मा ने कई ग्रन्थों का संपादन कर अनेक साहित्यकारों को विस्मृति के परदे से बाहर निकाल हिन्दी साहित्य को गौरवान्वित किया। उन्होंने भूमिका लेखन और अनुवाद का कार्य भी किया। उनके तीन अनुदित ग्रन्थ – 'हिन्दी गीता रहस्य' और 'आत्म विज्ञान शिक्षा', 'आत्म चरित' है। उन्होंने अपने अनुदित ग्रन्थों की मौलिकता की रक्षा करते हुए तथा विषय विस्तार से बचते हुए प्रौढ़ शैली मे अनुवाद किया। हिन्दी गीता रहस्य सार के भाषण मराठी में थे, 'आत्म विज्ञान शिक्षा' बंग भाषा में लिखी हुई थी तथा 'आत्म चरित' अंग्रेजी भाषा में लिखी हुई। पं. शर्मा तीनों भाषाओं के ज्ञाता थे और उन्होंने इन कृतियों का उत्कृष्ट हिन्दी

अनुवाद किया। स्पष्ट है कि उनके द्वारा अनुदित ग्रन्थों का ऐतिहासिक महत्व तो है ही और अनुवाद के द्वारा उन्होंने हिन्दी साहित्य की भी श्रीवृद्धि की है।

पं. झाबरमल्ल शर्मा लोक–साहित्य एवं लोक–संस्कृति के भी चितेरे थे। वे लोक संस्कृति के उद्घाटन के लिए सदैव तत्पर रहते थे। पं. झाबरमल्ल शर्मा द्वारा संकलित लोक–साहित्य एवं लोक–संस्कृति विषयक सामग्री भी अति महत्वपूर्ण है। लोक–वार्ता, लोक–संस्कृति और लोक–गीत जीवन के सुक्ष्म विवेचक पंडित जी ने अत्यन्त महत्वपूर्ण सामग्री एकत्रित की तथा इसी क्रम में शेखावाटी की कहावतें एवं मुहावरों के अर्थ स्पष्ट करते हुए 'मारवाड़ी महिला व्रत कथा' की रचना की। 'ख्यालों' (लोक नाटकों) को संग्रहित कर उन्हें नष्ट होने से बचाया तथा भविष्य की पीढ़ियों के लिए सुरक्षित रखा।

पं. झाबरमल्ल शर्मा के अध्ययन एवं अनुसंधान का प्रिय विषय था– 'राजस्थान का इतिहास'। कर्नल टॉड ने सर्वप्रथम राजस्थान के इतिहास को लेखबद्ध किया। परन्तु टॉड के ऐतिहासिक ब्यौरों में तथ्यान्वेषण की कमी है। पं. झाबरमल्ल शर्मा ने इतिहास को एक सीमित दायरे से बाहर निकाला। उन्होंने इतिहास को राजा महाराजाओं के परिवारों का लेखा–जोखा या युद्धों का विवरण मात्र नहीं रहने दिया। उन्होंने इतिहास में समाज, कवियों, समाज के अन्य महापुरूषों तथा लोक वीरों के जीवन पर भी प्रकाश डाला। सही अर्थों में उनकी ऐतिहासिक कृतियाँ सांस्कृतिक जीवन का इतिहास है। पं. शर्मा ने सीकर और खेतड़ी व शेखावाटी का इतिहास लिखा। हिन्दी साहित्य एवं पत्रकारिता में उनका जितना योगदान था, उतना ही इतिहास के क्षेत्र में है।

पं. झाबरमल्ल शर्मा ने अपने इतिहास ज्ञान के बल पर एक ऐतिहासिक उपन्यास 'मालविका' की रचना की। 'मालविका' एक प्रेमाख्यान उपन्यास है, जो कालिदास के नाटक 'मालविकाग्निमित्र' के कथानक के आधार पर लिखा है। इसमें पं. शर्मा ने शुंगकालीन गौरवमयी संस्कृति, कला, साहित्य, समाज, इतिहास और राजनीति का चित्रण किया है। इतिहास के इस गौरवमयी पृष्ठ को उजागर कर पं. शर्मा ने भारतीयों में देश–प्रेम की भावना जागृत की । पं. शर्मा ने उपन्यास में लोक–कल्याणकारी भावना को भी चित्रित किया है।

पं. झाबरमल्ल शर्मा के निजी संग्रहालय में करीब दस हजार से भी अधिक पत्र थे, जो उनको समय–समय पर विभिन्न साहित्यकारों, राजनेताओं, क्रान्तिकारियों, इतिहासकारों द्वारा लिखे गये थे। उन सभी पत्रों को पं. शर्मा ने सुरक्षित रखा। इन पत्रों के माध्यम से तत्कालीन सामाजिक, राजनैतिक व स्वतन्त्रता आन्दोलन के इतिहास के सूत्र ढूँढ़े जा सकते हैं।

पं. झाबरमल्ल शर्मा लेखक, संपादक और आलोचक की दृष्टि रखते थे। हालाँकि उन्होंने आलोचना से सम्बन्धित कोई स्वतन्त्र ग्रन्थ रचना तो नहीं की, परन्तु अपने लेखों के माध्यम से आलोचक के रूप में हिन्दी साहित्य के बड़े–बड़े विद्वानों बाबू श्याम सुन्दर दास और आचार्य रामचन्द्र शुल्क को भी नहीं बख्शा। पंड़ित शर्मा का मानना था कि इतिहास लेखकों को पूर्वाग्रह ग्रसित नहीं होना चाहिए। उन्हें तटस्थ भाव से साहित्य और साहित्यकार का मूल्यांकन करना चाहिए। उनके अनुसार संस्मरणीय व्यक्तियों के योगदान से इतिहास के पृष्ठों को वंचित करना एक घोर अनुचित कर्म है।

पं. झाबरमल्ल शर्मा ने हिन्दी को राष्ट्रभाषा तथा देवनागरी लिपि को राष्ट्रलिपि के रूप में मान्यता दिलाने के लिए 'कलकत्ता समाचार' और 'हिन्दू संसार' के माध्यम से जन आन्दोलन के लिए देशवासियों को आह्वान किया। हिन्दी भाषा और उसकी लिपि की श्रेष्ठता सिद्ध की तथा हिन्दी विरोधी तत्वों के साथ डटकर मोर्चा लिया था। उन्होंने 1923 ई. में जयपुर राज्य में हिन्दी को राजभाषा बनाने के लिए चले आन्दोलन में अपना योगदान दिया था। 1949 ई. में उन्होंने लोकसभा और राज्य सभा के सांसदों के नाम 'राष्ट्रभाषा और राष्ट्रलिपि' ज्ञापन भेजकर हिन्दी को राष्ट्रभाषा और देवनागरी लिपि को राष्ट्रलिपि बनाने के लिए प्रार्थना की। इस प्रकार पं. शर्मा ने हिन्दी को राष्ट्रभाषा बनाने में अपना अमूल्य योगदान दिया।

पं. झाबरमल्ल शर्मा हिन्दी के उन मूर्धन्य पत्रकारों में से एक थे, जिन्होंने हिन्दी सेवा के लिए अपने को पूर्ण रूप से समर्पित कर दिया था। ज्ञानोदय, भारत, मारवाड़ी, अग्रवाल, कलकता समाचार, हिन्दू संसार आदि पत्रों का कुशल संपादन करते हुए एक संपादक के दायित्व को गरिमा एवं दृढ़तापूर्वक निभाया था। पं. झाबरमल्ल शर्मा पत्रकारिता को व्यवसाय नहीं 'मिशन' समझते थे। वे पत्रकारिता की कुर्सी को न्यायाधीश की कुर्सी मानते थे। उन्होंने 'कलकता समाचार' के माध्यम से अनेक आन्दोलन चलाये।

पं. झाबरमल्ल शर्मा ने पत्रकारिता को व्यक्तिगत राग–द्वेष से परे समाज हित, देश सेवा और स्वतन्त्रता प्राप्ति का आधार बनाया। वे अपने समय के दिग्गज पत्रकारों के साहचर्य के कारण पत्रकारिता के क्षेत्र में जिन मानदण्डों की स्थापना की वे पत्रकारों के लिए आज भी अनुकरणीय है।

पं. झाबरमल्ल शर्मा का हिन्दी भाषा, साहित्य एवं संस्कृति के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान है। वे शब्दानुशासन के मामले में बड़े सचेत रहते थे। उन्होंने राजस्थानी के अनेक शब्दों के अर्थों का विशद् विवेचन और विश्लेषण किया। उनकी रचनाओं में शिल्प की कसावट है। उनमें वातावरण, देशकाल और भाषा शैली की अनुकूलता सर्वत्र मिलती है। शास्त्रीय प्रमाणों से पुष्ट और तर्क सम्पुष्ट विवेचन शैली के शैलीकार के रूप में उनकी रचनाएं सुग्राह्य हैं। उनकी राजस्थानी भाषा और साहित्य को सबसे बड़ी देन लोक साहित्य सम्बन्धी कार्य है।

पं. झाबरमल्ल शर्मा के साहित्य का समग्र रूप में मूल्यांकन करने पर इस निर्णय पर पहुंचते हैं कि पंडित शर्मा ने अपने साहित्य में मानवतावाद का उद्घोष करने के साथ–साथ निरन्तर कर्मशीलता और देश प्रेम का सन्देश दिया है। वे आजीवन राष्ट्र सेवा मे तल्लीन रहे और अपने जीवन मूल्यों के अनुरूप तन–मन–धन से एक नया समाज, एक तरूण भारत तथा एक नूतन मानव निर्मित करने के प्रयास में कार्यरत रहे। उन्होंने समय–समय पर अपने विचारों से भारतीय जन मानस को सामाजिक, आर्थिक तथा राजनीतिक विषयों के प्रति जागरूक किया तथा वैयक्तिक ओर सामूहिक कर्त्तव्य परायणता की भावना भारत के लोक जीवन में प्रसारित की । इनके लिए उन्होंने हिन्दी भाषा, साहित्य और पत्रकारिता के माध्यम से अद्भुत उपयोग किया।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. सं. डॉ. मंगला अनुजा (2002)–पुण्य स्मृति : पं. झाबरमल्ल शर्मा – झाबरमल्ल शर्मा संग्रहालय एवं पत्रकारिता शोध संस्थान, जयपुर (राजस्थान)।
2. पं. झाबरमल्ल शर्मा (1948 वि.)– खेतड़ी नरेश और विवेकानन्द–राजस्थान एजेंसी, नं. 8, राजकुमार रक्षित लेन (चिनी पट्टी) बड़ा बाजार, कलकत्ता।
3. सं. विजयदत्त श्रीधर (2000)–समय से साक्षात्कार–माधव स्प्रे स्मृति समाचार पत्र संग्रहालय एवं शोध संस्थान भोपाल–462003
4. सं. पं. झाबरमल्ल शर्मा, पं. बनारसीदास चतुर्वेदी (वि.सं. 2050)–बाबू बालमुकुन्द गुप्त निबन्धावली–गौरव गाथा संगम, 1/4799 बलबीर नगर विस्तार, शाहदरा दिल्ली–110032
5. कृष्ण बिहारी मिश्र (1994)–हिन्दी पत्रकारिता–लोक भारती प्रकाशन, इलाहाबाद
6. डॉ. संजीव भानावत(2000)– पत्रकारिता का इतिहास एवं जनसंचार माध्यम– यूनिवर्सिटी पब्लिकेशन, जयपुर।
7. सं. पं. झाबरमल्ल शर्मा (1980)–गुलेरी पत्र–साहित्य–ज्योति प्रकाश मन्दिर 1/4799 बलबीर नगर विस्तार, शाहदरा–दिल्ली–110032
8. सं. काशीराम शर्मा (1977) – पं. झाबरमल्ल शर्मा : अभिनंदन ग्रंथ–राजस्थान मंच 1/2 से 13, रामकृष्णमपुर, नई दिल्ली – 110022
9. डॉ. पदमजा शर्मा (1998)–यशस्वी पत्रकार : पं. झाबरमल्ल शर्मा – राजस्थानी ग्रन्थागार, सोजती गेट जोधपुर (राजस्थान)

*** Corresponding Author:**
डॉ. रामकुमार सिंह
व्याख्याता, हिन्दी विभाग
राजकीय महाविद्यालय, रामगढ़ शेखावाटी सीकर
Email-ramkumarsingh358@gmail.com, Mob.- 9460166640